14-1-67

रात्री क्लास ओम शान्ती 14-1-1967

शिव जयन्ती बाप तो अपनी नही मनायेंगे। बच्चे ही मनावेंगे। अब बच्चा तो ब्रह्मा भी है। डायरेक्शन इनको भी देना पड़ता है। बाकी शिव बाबा थोड़ेई डायरेक्शन देगें कि हमारी शिव जयन्ती ऐसे मनाओ। ब्रह्मा हो गया तुम्हारा मुख्य भाई। बाप भी। भाई भी है नां। पढ़ते है, भाई बहन सब पढ़ते है। शिव बाबा पढाते है। फिर भी शिव बाबा दो तीन रोज़ से शिव जयन्ती के लिये समझा रहे है। गवर्मेन्ट को भी समझा कर लिखना है शिव बाबा जो सब आत्माओं का बाप है वो भरत को हर 5000वर्ष हेवन वा डीटी स्वराज्य बनाते है। बना रहे है। जिसके लिये यह विनाश भी हो रहा है। यह वो ही महाभारत लड़ाई है। हम पहले से आप को इतलाह (सूचित) कर रहे है। शिव बाबा प्रजापिता ब्रह्मा दवारा आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे है। बाकी अनेक धर्मों के विनाश अर्थ यह सामने महाभारी लड़ाई खड़ी है। भारतवासियों का तो कल्प-2 बाप से वर्सा लेने का हक है। जब तक ब्रह्मा कुमार कुमारियां नां बनें शिवबाबा से वर्सा कैसे मिले? बाबा तो डायरेक्शनस देते है। कोई करे भी नां। बाबा प्रदर्शनी और सर्विस कमेठी को राय दे रहे है। जो जो सर्विसएबुल बच्चे है वो अपनी राय भी भेज सकते है। कमेटी को। गवर्मेन्ट को लिखना चाहिये कि शिव जयन्ती तो बहुत धूम धाम से मनानी चाहिये। इनकी हालीडे तो बहुत बड़ी होनी चाहिये। जो सर्व का पतित पावन भी है, सदगती दाता भी है भरतको सहज राज योग भी सिखा रहे है। कल्प-2 आजाई का वर्सा देते है। उनकी शिव जयन्ती का नां मनाना यह तो सबसे बड़ी ग्लानी है। ऐसे-2 लिखना चाहियें। टाइम तो बहुत पड़ा है। सर्विस का जिनको शौक है वो लिख कर [illegible] ी में प्रदर्शनी कमेटी को भेज दे। फिर वो बाबा पास भेज देगें पास कराने। भल गवर्मेन्ट को लिखो इस एक्सपलेनेशन अनुसार शिव जयन्ती भारतवासियों को मनानी चाहिये। हम राय देते है। हम कोई भूख हड़ताल पिकेटिंग आद नही करते है। राय देते है। अखबारों में भी डालना है। शिव बाबा जो सबका दुखः हर्ता सुख कर्ता है उनका तो दिन सब दुनिया वालों को मनाना चाहिये। परन्तु नां तो आत्मा को नां बाप को जानते है इसलिये ही तो निधणके बन पड़े है। इसमें डरने की कोई बात नही है। हम राय देते है। ब्रह्मा कुमार कुमारियां शिव बाबा के बच्चे भी ठहरे पोत्रे भी ठहरे। ऐसे-2 लिखना चाहिये। और उनके साथ-2 ओपीनियनस का किताब भी छप जाना चाहिये। परन्तु हमारे पास बच्चों का आपस में मत भेद भी बहुत है इतना हड़ वर्क करते नही है। माया की ग्रहचारी बैठती है। देह अभिमान में ग्रहचारी बहुत आती है क्याई में। एक दम नपुसंक बना देती है। इसमें देही अभिमानी बनना पड़े। शिव जयन्ती तो बहुत अच्छी रीत मनानी है। बाबा भी मुर्ली में तो रोज़-2 चलाते ही रहेंगें। समझाते रहेगें ऐसे-2 लिखो। अखबारों में भी डालना है। यह भी पुआइन्ट लिखना है कि इस समय कौरव सम्प्रदाय जिसको कांग्रेस, कुछ भी कुम्भ करण की नींद में सोयें पड़े है। जब विनाश होगा तब नींद से जाग जागेंगे। हम कल्प-2 इतलाह देते है। होगा फिर भी वो ही जो कल्प पहले हुआ है। कुम्भ करण की नींद में सोयें पड़े है। और भंभोर को आग लग जावेगी। हम प्रदर्शनी दवारा भी जगा रहे है। परन्तु जैसे कल्प पहले सोये पड़े थे और भंभोर को आग लग गयी थी वैसे ही फिर भी होगा। ऐसे-2 लिखना चाहिये। बच्चे भी बहुत है जो घोर नींद में सोयें हुये है। बाबा सौगी के लिये कब से कहते रहते है छपाने लिये कोई करते नही है। एक दो के ऊपर ठिक्कर ठोकते रहते है। माया से थप्पड़ खाते रहते है। लड़ाई हैनां। महारथी से माया और ही पहलवान होकर लडेगी। घोड़े स्वार से घोड़ेस्वार, प्यादे से प्यादा हो होकर लडेगी। महारथियों को तो छोड़ती ही नही है। अच्छी ही देह अभिमान में ले आती है। बाप बच्चों को जगाते ही रहते है। देह अभिमान की बड़े से बड़ी बिमारी है। देह अभिमान में आना माना रावण बनना है। माया बड़ी जबरदस्त है। बाप कहते है जितना मैं शक्तिवान हूँ, उतना ही फिर रावण भी शक्तिवान है। ड्रामा अनुसार ही इनकी भी शक्ति है मेरी भी शक्ति है। मैं विश्व की बादशाही देता हूं माया फिर नाक से पकड़ कर पूरा कदर बना देती है। मैं जी, ओ, जी, बनाता हूं, वो डी, ओ, जी, बना देती है। इतना जबरदस्त रावण है जिस को कोई जानते ही नही है। रावण को जलाते है परन्तु समझते कुछ भी नही है। पीस पराइज़ लेते

जी.ओ.जी (G.O.G) डी ओ जी (D.O.G)

रहते हैं। सब जंगल के रैप्स हैं। भारत अभी कांटों का जंगल है। भारत फूलों का बगीचा था। सतयुग है फूलों का बगीचा। कलियुग है कांटों का जंगल। बाप को गाड फादर को नही जानते है तो जंगली जनावर ठहरे नां। आत्मा क्या चीज है वो भी नही जानते है। हम सब ब्रदर्स हैं तो फादर कहां? कहते भी है गाड फादर। तो वो फादर किसका ठहरा। नां अपने को नां फादर को जानते हैं। गाली देते रहते है। सर्वव्यापी कहते हैं कहते है कुत्ते बिल्ली में है। बाप को गाली देते देते तो खुद ही भिखारी बन पड़े हैं। यह गीता हो गई नां। मैं हरे जैसा बनाता हूं माया तुच्छ बुधी बना देती है। यह सब लिखना चाहिये। भगवानोवाच भारतवासी गाली तो सबको देते हैनां। कृष्ण को भी गाली दी है कि भगाते है। बाप भी कहते है यह कदर हैं हमको गाली देते रहते है। राम सीता की भी ग्लानी, कृष्ण की भी ग्लानी, तो मैड़ चैप्स ठहरे नां। रावण ने मैड़ चैप्स बना दिया है। इस लिये अनाज आद कुछ भी मिलता नही है। यह बेहद का बाप बच्चों को समझा रहे है। मुझे सर्वव्यापी कह दिया है। कितने जंगली जनावर हैं आसुरी सम्प्रदाय। तुच्छ बुधी बन गये है। सूरत मनुष्य की सीरत रैप्स जैसी है। यह तो बात ठीक हैनां? अच्छा बच्चों को गुड़ नाईट

16-1-67प्रातः क्लास :-अब देखना है कि कितना मचाते है। ट्रन्सलाईट के चित्र छोटे भी हो जो सबको मिल जायें। तुम्हारी है बिलकुल नई बातें। कोई भी समझ नही सकते हैं। अखबारों में जरूर डालना चाहिये आवाज़ करना चाहिये। सेन्टर्स खोलने वाले भी ऐसे चाहिये। लल्लू पन्जू थोड़ेई खोल सकेंगें। अभी तो बच्चों को ही पूरा नशा नही चढ़ा हुआ है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जितना नशा चढ़ा हुआ है काम करते रहते हैं। कोई भी राय देनी है तो प्रदर्शनी कमेटी को भेज दें। स्टॉल्स बनाने लियेभी बाबा कह रहे है। आगे बनाये थे फिर छोड़ दिया फिर नये सिर मेहनत करनी पड़े। समझाना है इतनी ढेर ब्रह्मा कुमार कुमारियां हैं नां नां। अभी ब्रह्मा का नाम निकाल कोई का भी नाम डालो। राधा कृष्णन का नाम डालो, अच्छा फिर ब्रह्मा कुमार कुमारियां कहां से आवेंगी। कोई तो ब्रह्मा चाहिये नां जो मुख वंशावली ब्राह्मण हों। राधाकृष्णन को बिठाओ। परन्तु कोई मानें भी तब नां। यहां तो ढेर ब्रह्मा कुमार कुमारियां है। सर्विस पर रहे हैं। बन्दरों को समझाने के लिये कितनी मेहनत करनी पड़ती है। अब देहली में भी लिखा है कि दो स्टाल लो। खर्चा तो जो होगा उसका इजा नही है। आगे चल कर बहुत समझेंगें। खर्चा तो करना ही पड़ता है। देखें वहां से भी कोई निकलता है? चित्र तो कितने क्लियर हैं। रावण राज्य का। भ्रष्टाचारी, बन्दर बुधी मनुष्य। यह भी लिखना चाहिये। इसमें डरने की कोई बात ही नही है। शॉ करेंगें। हम कोई क्रिमिनल काम तो कर नही रहे है। परन्तु डरपोक भी बहुत ही है नां। ऐम आब्जेक्ट को जो देखने से कितनी खुशी होती है। ओम शान्ती

11-1-67: रात्री क्लास यह 84जन्मों की कहानी मोस्ट सिम्पल है। यह सदैव याद रहे तो अन्दर में बड़ी खुशी रहे। इसलिये ही गाया हुआ है अतिइन्द्रिय सुख गोप गोपियों से पूछो। तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। हम सो ब्राह्मण सो देवता, अब फिर बाबा के पास जाना है। पावन बनना है। यह कहानी बैठ याद करें तो बहुत पास हो जायें। परन्तु करते ही नही है। पतित नही बनना है। कर्म इन्द्रियों से कोई भी विकर्म नही करना है। इसकी फिर सजा बहुत कड़ी है। बाकी ज्ञान तो बहुत मीठा है। घर में भी बड़ी युक्ति से रहना होता है तो फिर कोई भी नाराज नही होगा। यह क्रिय पुरी है। कर्म एक दो को कोस करते है। बाप आर्डीनेन्स निकालते है कोई क्रोध मत करो। काम कटारी मत चलाओ। बाकी कोई हंगामा थोड़ेई करते है। बाकी इतना गऊ-कोस आद पर हंगामा करते है। अब इससे तो गवर्मेन्ट का करोड़ों का व्यापार चलता है। कितने विचार सूक्ष्म करते रहते है। हम तो है राज योगी सायरच नां ऊंचा खाना नां ही कम। अच्छी तरह सब मिलता रहता है। तुम हो मोस्ट बिलवेड चिल्ड्रेन। बाप कहते है मैं आया हूं बादशाही देने। मैं थोड़ेई लड़ना झगड़ना पसंद करूंगा। अवस्था ऊंच बनाते रहते है। मौत कोई भी समय आ जावे कुछ कह नही सकते है। याद से तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते जाओ। इसको योगाग्नी कहा जाता है। जिससे पाप भस्म हो जावें! अच्छा गुड़ नाईट